REVIEW OF RESEARCH

ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF)
VOLUME - 7 | ISSUE - 1 | OCTOBER – 2017

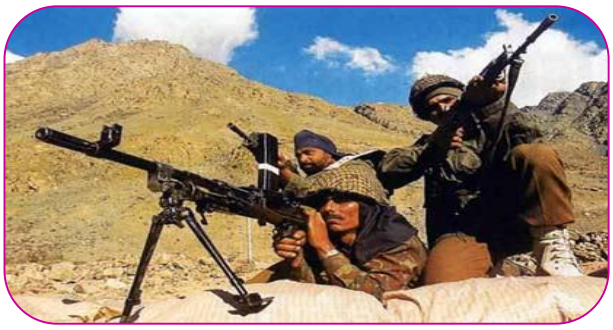

राष्ट्रशक्ति के अदृश्य तत्व और भारतीय सुरक्षा

प्रा. डॉ. के. बी. पाटील
संशोधक , सहयोगी प्राध्यापक , विभाग प्रमुख, संरक्षण व सामरिक शास्त्र , श्रीमती. एच. आर. पटेल कला महिला महाविदयालय, शिरपूर जि. धुळे.

प्रस्तावना :

साधारणतया ऐसी अवधारण है कि सेना के द्वारा ही राष्ट्रीय अस्तित्व की रक्षा की जाती है, पर वह अंशत: ही सत्य है। राष्ट्रीय सुरक्षा के तात्पर्य केवल सैनिक प्रतिरक्षा (डिफेन्स) से ही नही है, राष्ट्र की सर्वागीण सुरक्षा से है।चूँकी किसी राष्ट्र से सम्बन्धित समस्त प्रभावशाली तत्त्व (मूर्त एवं अमूर्त) सम्मिलित रुप से उस राष्ट्र की शक्ति का निर्धारण करते है। अत: दूसरे शब्दो में हम यह कह सकते हैं कि "राष्ट्रीय सुरक्षा के तात्पर्य किया राष्ट्र की अपनी ही प्रभावोत्पादक शक्ति द्वारा सुधारु रुप से अपनी ही सर्वागीण रक्षा करने से है।"

प्रत्येक राष्ट्र से सम्बन्धित ऐसे अनेक दृष्य व अदृष्य तत्व होते है. जो उस राष्ट्र की शक्ति को निर्धारित करते है, ये समस्त तत्त्व राष्ट्रीय सुरक्षा के विषय है। इनमें दृश्य तत्वो के अन्तर्गत-प्रमुख भौगोलिक विशेषताएँ, प्राकृतिक संसाधान, जनसंख्या, उद्योग धन्धे, सैन्य शक्ति, सरकार (कूटर्नीति), सूचना तथा विज्ञान एवं तकनीक आदि, आते है, जबकि अदृष्य तत्वों के अंतर्गत राष्ट्रीय चरित्र, मनोबल प्रखर एवं गतिशील नेतृत्व राष्ट्रीय संस्कृति, देश भक्ति, राष्ट्रीय एकता और अनुशासन, तथा राष्ट्र-हित की सर्वोपरिता की धारणा राष्ट्रीय शक्ति के आधार का सृजन करती है। इनकी रक्षा, संरक्षण एवं उत्तरोत्तर सकारात्मक गुणात्मक विकास ही राष्ट्रीय सुरक्षा के दायरे का निर्धारण करता है।

राष्ट्रीय चरित्र :-

राष्ट्रीय सुरक्षा की दृष्टि से राष्ट्रीय चरित्र की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है जिसके निर्धारण में संस्कृति, धर्म व इतिहास अहम् भूमिका का निर्वहन करते है। यह "एक अदृश्य आत्मा है जो कि सम्पूर्ण जनता की श्वासों मे निहित रहती है। वे सभी उसमे भागीदार रहते है, चाहे वे बराबर के भागीदार हो या न हो, यह आत्मा उनके गुण व दोष दोनों की कोई विशिष्टता व चरित्र प्रदान करती है, वे गुण एक राष्ट्र की अन्य राष्ट्रो से पृथकता स्थापित करती है।

राष्ट्रीय सुरक्षा पर राष्ट्रीय चरित्र का अनिवार्यत: प्रभाव पडता है, क्योकि जो कोई भी व्यक्ति युद्ध तथा शान्ति मे राष्ट्र की ओर से अथवा राष्ट्र के लिए कार्य करते है, वे ही उनकी नीतियों का निर्धारण, कार्य संचालन व निर्माण करते है, चुनते है अथवा चुने जाते है, जनमत पर निर्णायात्मक प्रभाव डालते है, तथा उत्पादन व खपत बढाते है। ये सभी अधिक या कम स्तर पर उन बौद्धिक तथा नैतिक गुणों की छाप से युक्त होते है, जो राष्ट्रीय चरित्र को निर्मित करते है। भारतीय लोगों को सत्य व अहिंसा का विचार, पुर्नजन्म, आत्मा की अमरता, स्वर्ग प्राप्ति की धारणा तथा साझा संस्कृति उनके युद्ध व शान्ति कालीन विभिन्न क्रिया-कलापों को प्रभावित करती है। रुसियों की मौलिक शक्ति व धैर्य अमेरिकियों कि व्यक्तिगत प्रेरणा तथा अविष्कार की क्षमता, ब्रिटीश लोगों की कट्टरता हीनसाधारण सूझ-बूझ ा, जर्मन लोगों का आत्म नियंत्रण तथा संपूर्णता वे गुण है, जो सदा ही प्रकट होते रहते है। जब-जब किसी विशेष राष्ट्र के सदस्य व्यक्तिगत अथवा सामूहिक कार्यो में लिप्त होते है, तब-तब उनका राष्ट्रीय चरित्र व्यक्त होता चलता है। विशेष कर संकट कालीन स्थिती में राष्ट्रीय सुरक्षा पर राष्ट्रीय चरित्र का निर्णायक प्रभाव पडता है।

भारत की आत्मा उसकी संस्कृति में बसती है और यह सांस्कृतिक बोध ही भारत की वास्तविक शक्ति व उर्जा है। भारत इसलिए भारत है, क्योकि उसकी अपनी एक विशिष्ट अखण्ड, संस्कृति है। इस संस्कृति के प्रति देशवासियों में जो अनुराग है वह सामान्यतया आज भी हर कोने पर दिखाई देता है। लेकिन पश्चिम ने भारत को कभी एक राष्ट्र नही माना । चूँकि यूरोपीय समीक्षकों की दृष्टि में भारत कभी एक विशाल राष्ट्र नही रहा, अत: उनके लिए भारत की एकता अथवा राष्ट्रीयता की बात करना कोरी भावुकता या राजनीतिक विलास मात्र हैं, एक वास्तव मे ऐसा ही नही। भारतीय चेतना में राष्ट्रभाव का सम्बन्ध राजनिती से नही है, बल्कि उसका सम्बन्ध हैं-सांस्कृतिक चेतना से। विभिन्न कालखण्डों में भारत के अनेक भागों मे भिन्न-भिन्न राजघराने शासक बन कर उभरे, अवश्य,

पर सभी राजघरानें जब अपने को सांस्कृतिक भाव भूमि पर उतारते थे तब उन्हें एक अखण्ड भारतीय चेतना ही उपलब्ध होती थी। पश्चिम के विचारक और समीक्षक भारतीय संस्कृति के इस पक्ष को आज भी नहीं समझ पा रहे है। उनकी दृष्टि में राष्ट्रीयता का सम्बन्ध केवल सत्ता और राजनिति से होता है। जबकि भारतीय मनीषा सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की पक्षधर है। संस्कृति का यही अन्तर्मुखी पक्ष भारत की सबसे बडी शक्ति है। यह इतनी बडी शक्ति है, जिससे भारत की सामरिक नीति भी प्रभावित होती है। एक बार यदि कही यह भाव क्षेत्रीय जनता के मन मे बैठ जाए कि उसकी, उसका इतिहास और उसकी अस्मिता भारत केअन्य भागों और क्षेत्रों से अलग है तब फिर वास्तविक राष्ट्रीय एकता के श्रोत सूखने लगते है और जहॉ वास्तविक राष्ट्रीय एकता के श्रोत सूखने लगते है और जहॉ वास्तविक राष्ट्रीय एकता से श्रोत सूख जाते है, वहॉ सेना के बल बूते राष्ट्रीय एकता की स्थापना नही की जा सकती है। सैन्य शक्ति के बल पर राष्ट्रों का स्थायी निर्माण कर पाना भी सम्भव नही है। उदाहरणार्थ लेनिन ने सैन्य-शक्ति के बल पर सैवियत संघ का एक राष्ट्र के रुप में निर्माण किया, लेकिन यह स्थिती अधिक दिनों तक चल नहीं सकी और अन्ततः सोवियत संघ बिखर गया। सैन्य दृष्टि से महाशक्ति होने के बावजूद सोवियत संघ का विभाजन यह स्पष्ट करता है, कि सेना के बल पर राष्ट्रीय एकता सम्भव नही है और न ही सैन्य-शक्ति से उस उर्जा का निर्माण किया जा सकता है, जो राष्ट्र की उखण्डता के लिए आवश्यक होती है। राष्ट्र की अखण्डता के लिए आवश्यक उर्जा का निर्माण केवल तभी सम्भव है जब सांस्कृतिक एकता का जो अन्तर्मुखी पक्ष है, वह सशक्त हो।

राष्ट्रीय मनोबल :-

किसी राष्ट्र के निवासियों मे राष्ट्र-हित को व्यक्तिगत हितों के ऊपर रखने की तत्परता के रुप में जो गुण होता है, उन सबको मिलाकर राष्ट्रीय मनोबल कहा जा सकता हैं इस गुण का एक अंश है-बलिदार की तत्परता, जो किसी भी राष्ट्र के प्रत्येक कार्य में व्याप्त रहता है-उसकी कृषि में, औद्योगिक उत्पादन में, उसके सैनिक संगठन में, कूटनीति व उसकी कार्यकारिणी में भी जनमत के रुप में यह वह अदृष्य शक्ति प्रदान करता है, जिसके सहारे के बिना कोई भी सरकार चाहे वह प्रजातांत्रिक हो अथवा निरंकुश, अपनी नितियों को पूर्ण प्रभाव के साथ कार्यान्वित नही कर सकती। उपस्थिती अथवा अनुपस्थिति तथा उसके गुण राष्ट्रीय संकट के समय प्रकट होते है, जबकि या तो राष्ट्र का जीवन ही दाव पर लगा हो और वह आधारभूत निर्णय लेने की घडी हो, जिस पर राष्ट्र का जिवित रहना अवलम्बित है।

इतिहास से ऐसे अनेक उदाहरण खोजे जा सकते है, जहॉ सेना की संख्या द्वारा उनके शक्ति का निर्धारण नही हुआ वरन् एक छोटी सी सेना मे बडी सेना को परास्त कर दिया। वह कौन सा अज्ञात तत्त्व या चेतना थी जिसके कारण यह सम्भव हो सका? कुछ ज्ञात कारणों के साथ ही साथ यह पाया गया कि वह अज्ञात तत्त्व थी-उस सेना की चेतना या मनोबल। आज के सम्पूर्ण युद्ध की स्थिती में प्रत्येक क्षण (युद्ध कालीन और शन्तिकालीन स्थिती में भी) शत्रु के विभिन्न मनोवैज्ञानिक शस्त्रास्त्रो का सामना करने के लिए सेना को ही नही वरन् सामान्य जनता को भी सतर्क व प्रतिबद्ध रहने की आवश्यकता है, क्योंकि अब युद्ध रणक्षेत्र तक ही सीमित नही रह गया है, उसका शिकार आम जनता भी होती है। बलिदान की तत्परता युद्ध काल में ही नही शक्ति काल में भी राष्ट्रीय सुरक्षा की दृष्टि से महत्त्वपुर्ण होती है। गरीब देशों के लिए सैनिक कार्यों के लिए या उद्योग-व्यापार मे पूँजी लगाने के लिए उपभोग की मात्रा में कमी करने की आवश्यकता पड सकती है तथा समय, श्रम और पूँजी के त्याग की भी आवश्यकता पड सकती है। राष्ट्र के लिए व्यक्ति के बलिदान करने की तत्परता का निर्णय में एक महत्त्वपूर्ण कसौटी यही है कि राष्ट्रीय सरकार पर उसकी आस्था कितनी है, साथ ही उसके राष्ट्रप्रेम की भावना कितनी बलवती है। पश्चिम बलिदान की तत्परता को राज्य-प्रेम से जोडता है जबकि भारतीय मनीषा राष्ट्रप्रेम को महत्त्व देती है जो कि राष्ट्रीय सांस्कृतिक एकात्मकता से उपजता है। हमारी मान्यता देश की विशेषता रही है। अतः यह आवश्यक है कि देश के गौरवपूर्ण इतिहास, बलिदान की जानकारी से देश को बराबर अवगत कराया जाए। राष्ट्र के सामर्थ्य की पहचान करके उसे यथार्थ का जाना पहचाना जाना चाहिए। राष्ट्रीय मनोबल को जगाकर, राष्ट्र जनसंख्या व सभी प्राकृतिक उपहारो को विशिष्ट संसाधन में बदलकर विश्व के धरातल पर अपनी महत्ता स्थापित करने में समर्थ हो सकते है।

सारांश :-

यहॉ एक बात अवश्य करने में रखना चाहिए-'राजनीति तोडती है जबकि संस्कृति जोडती है' अतः देश के राजनीतिक दलों को ऐसे आचरण व कार्य से बचना चाहिए जिससे राष्ट्र की एकात्मकता प्रभावित हो। उन्हे भारत, पाकिस्तान, व सोवियत संघ के विखण्डन से भी सीख लेनी चाहिए। जिस देश में वर्ग की खाइयॉ बहुत गहरी होगी, वह देश अपने राष्ट्रीय मनोबल को अनिश्चित अवस्था में पाएगा। ऐसी अवस्था राष्ट्रीय सुरक्षा व राष्ट्रीय अखण्डता के लिए घातक हो सकती है जबकि राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए आधारभूत प्राथमिक आवश्यकता राष्ट्रीय एकता है, जिसके संवर्धन से सुरक्षा बलवती होती है व राष्ट्रीय मनोबल में गुणात्मक बुद्धि होती है।

अंग्रेजो की कुटिल निति के कारण देश राजनीतिक रुप से तो विभाजित हुआ ही, इसका प्रभाव कुछ सीमा तक सांस्कृतिक व भावात्मक एकता पर भी पडा। अतः आज इस बात की भी महती आवश्यकता है कि उनके द्वारा रोपे गए विषैले पौधो को उखाड कर उनके स्थान पर राष्ट्रीय एकात्मकता को सुदृढ करने वाले व राष्ट्रीय मनोबल को सुदृढता प्रदान करने वाले विचारों व भावो को रोपा जाए। इसके लिए आवश्यकता है-राष्ट्रीय अनुशासन कि। यह अनुशासन राष्ट्रीय सांस्कृतिक एकात्मकता को और अधिक दृढ करके व राष्ट्र हित की सर्वोच्चता को स्थापित करके ही प्राप्त किया जा सकता है।

संदर्भ :-

1) Mr. Jawahar Lal Nehru, India's Foreign Pollicy (New-Delhi, 1971) P.79
2) डॉ. अशोक कुमार सिंह, राष्ट्रीय सुरक्षा, प्रकाश बुक डेपो, बरेली, 1992
3) डॉ. मुनेश कुमार, भारतीय राष्ट्रीय सुरक्षा, डिस्कव्हरी पब्लिशिंग हाऊस प्रा. लि., नई दिल्ली, 2010
4) डॉ. लल्लनजी सिंह, राष्ट्रीय रक्षा और सुरक्षा, प्रकाश बुक डेपो, बरेली, 1993
5) डॉ. प्रभाकर गर्दे, राष्ट्रीय सुरक्षा, विद्या प्रकाशन, नागपूर, 2000
6) प्रा. ए. पी. चौधरी, सौ. अर्चना चौधरी, राष्ट्रीय सुरक्षा, निराली प्रकाशन, पुणे, 1999